किन्नर केन्द्रित हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक जीवन का स्याह यथार्थ

ज्योति,

शोधार्थी,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ0प्र0)

डॉ0वीरेन्द्र सिंह यादव,

अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ0प्र0)

शोध सारांश

स्त्री और पुरूष समाज की उत्पत्ति के दो प्रमुख घटक हैं। इन दोनों के अभाव में हम समाज के विकास की कल्पना नही कर सकते हैं। समाज में इन दोनो वर्गों का हमेशा से अपना विशेष महत्व रहा है। इस संसार को चलाने के लिए ये दोनो वर्ग विशेष रूप से उत्तरदायी रहा है। किन्तु इन दो वर्गों के साथ–साथ एक और वर्ग भी है जो इनके साथ ही चलता रहा है किन्तु इस वर्ग को समाज ने कभी स्वीकार नही किया उसे सदैव से ही उपेक्षित, बहिस्कृत किया गया है। भारतीय समाज में इस समाज को एक विशेष नाम दिया गया 'किन्नर' अर्थात हिजड़ा। द्विलिंगी रूपी इस समाज में सदियों से यह तीसरा समाज अंधकार में जीता आया है। इस समाज को अपने जनानांगी दोषों के कारण समाज से बहिष्कृत किया गया। यह समाज न तो नर है न ही मादा। अर्थात इसका कोई लिंग नही। यह अलिंगी है। वर्तमान समय में लेखक, लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से विमर्शों को समाज के सम्मुख बड़े ही शक्तिशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसमें किन्नर विमर्श प्रमुख है। हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श अपनी अस्मिता की पहचान के लिए प्रयत्नशील है । वर्तमान हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों इस विमर्श को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

Key words : *थर्ड–जेन्डर, लिंगोपासक, 'तिरस्कार, जनानांग दोष।*

स्त्री और पुरूष समाज की उत्पत्ति के दो प्रमुख घटक हैं। इन दोनो के अभाव में हम समाज के विकास की कल्पना नही कर सकते हैं। समाज में इन दोनो वर्गों का हमेशा से अपना विशेष महत्व रहा है। इस संसार को चलाने के लिए ये दोनो वर्ग विशेष रूप से उत्तरदायी रहा है। किन्तु इन दो वर्गों के साथ–साथ एक और वर्ग भी है जो इनके साथ ही चलता रहा है किन्तु इस वर्ग को समाज ने कभी स्वीकार नही किया उसे सदैव से ही उपेक्षित, बहिस्कृत किया गया है। हमारे भारतीय समाज में इस समाज को एक विशेष नाम दिया गया 'किन्नर' अथार्थ हिजड़ा। एक ऐसा समाज जो अपनी शारीरिक कमी के कारण समाज से हमेशा ही अलग समझा गया। इस समाज को कभी भी मुख्य धारा से जोड़ा नही गया। समाज ने सदियों से ही इस वर्ग विशेष को अपने से अलग कर उपेक्षित किया। यह समुदाय अदृश्य रूप में सरस्वती के समान प्राचीन काल से ही समाज में उपस्थित रहा है। किन्तु आज 21वीं सदी जो की अपनी अस्मिता अपनी पहचान अपने अस्तित्व को पचानने की सदी है इसमें भी यह समाज अभी बहुत पीछे है।

द्विलिंगी रूपी इस समाज में एक और समाज भी है जो सदियों से इस समाज में

अंधकार में जीता आया है। इस समाज को अपने जनानांगी दोषों के कारण समाज से बहिष्कृत किया गया। यह समाज न तो नर है न ही मादा। अर्थात इसका कोई लिंग नही। यह अलिंगी है। इस समाज के लोगो को प्राचीन काल में किन्नर कहकर सम्बोधित किया जाता था। किन्तु समाज में इन्हे अलग–अलग नामों से जाना जाता है हिन्दी अर्थात भारत वर्तमान में इनके लिए इन्हे शिखण्डी, हिजड़ा, छक्का, थर्ड जेन्डर, कीव, खोजा, मौसी, थर्ड–जेन्डर इत्यादि नामों से जाना जाता है।

भारत में प्राचीन काल से ही इस विशेष वर्ग समुदाय अर्थात हिजड़ो का उल्लेख हुआ है। भारत के पौराणिक ग्रन्थ महाभारत में शिखंडी नामक किन्नर का उल्लेख मिलता है। महाभारत में अर्जुन ने अपने अज्ञातवास के समय वृहन्नला नामक हिजड़ा का रूप धारण करके अपना जीवन निर्वाह किया था। मध्यकाल में मुगलशासन काल में भी हिजड़ो का विशेष महत्व था। राजा लोग युद्धों की निरंतरता के कारण राज्य से बाहर ही रहते थे ऐसे में रानियाँ किसी और के साथ सम्बन्ध न बना ले इसके लिए हरम की व्यवस्था की गई। किन्नर अर्थात हिजड़ों को इनके पहरेदार के रूप में नियुक्त किया गया। अल्लाउद्दीन खिलजी के शासनकाल एक शक्तिशाली किन्नर हुआ जिसका नाम मलिक गाफूर था। इसने खिलजी के शासन में अपनी विशेष पकड़ बना ली थी। किन्नर समुदाय हमेशा से समाज में रहा है किन्तु वह कभी भी उभर के सामने नही आया हमेशा पीछे ही रहा है।

वर्तमान युग अस्मिता का युग है, अपनी पहचान का युग है, इस युग में स्त्री, दलित, आदिवासी, वृद्ध आदि विमर्श अपनी पहचान अपने अस्तित्व को स्थापित करने में लगे हुए है और लगभग सफल भी हुए है। किन्तु–किन्नर अर्थात हिजड़ा समुदाय अपनी पहचान के लिए संघर्ष अभी पूरी तरह से नही कर रहा है। साहित्य समाज का दपर्ण होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने ठीक ही लिखा है। साहित्य के माध्यम से विमर्शों ने अपनी अस्मिता की पहचान की हैं। वर्तमान समय में लेखक, लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से विमर्शो को समाज के सम्मुख बड़े ही शक्तिशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, फिर वह चाहे स्त्री विमर्श हो या दलित विमर्श हो या आदिवासी विमर्श हो, किन्तु जब हम किन्नर विमर्श की बात करते है तो यह साहित्य मौन हो जाता है ऐसा नही है कि किन्नर के विषय में हिन्दी साहित्य में कुछ लिखा ही नही गया है। किन्नर के विषय में लिखा गया है किन्तु उसे नायक नही बनाया गया सिर्फ एक पात्र के रूप में लिया गया है। किन्नर को साहित्य में केवल मनोरंजन करने वाले पात्र के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। किन्तु अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करे तो साहित्य में किन्नर विमर्श अपनी अस्मिता की पहचान के लिए प्रयत्नशील है वर्तमान हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों इस विमर्श को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है– (2002) में नीरजा माधव द्वारा लिखित उपन्यास 'यमदीप' हिन्दी साहित्य जगत में किन्नर समाज का स्वतंत्र रूप से प्रतिनिधित्व करने वाला प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास ने हिन्दी साहित्य जगत में एक हलचल सी पैदा कर दी। अतः तब से अब तक कई उपन्यासों को लिखा जा चुका है जिसमें 'किन्नर कथा' ,महेन्द्र भीष्म (2010); 'गुलाम मंडी', निर्मला भुराड़िया (2014), 'नाला सोपारा' पोस्ट बाक्स नं0 203, चित्रा मुद्गल (2016) 'जिंदगी 50–50' ,भगवंत अनमोल (2017) 'तीसरी ताली' ,प्रदीप सौरभ (2011) मोनिका देवी का उपन्यास 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन और हाँ मैं किन्नर हूँ, आदि प्रमुख उपन्यास है।

इस लिंगोपासक समाज में किन्नरों को घोर अभिशप्त माना जाता रहा है। इस समुदाय को समाज ने हमेशा से ही प्रताड़ित ही किया है। शारीरिक कमी के कारण इस समाज को हमेशा

से ही हीन दृष्टि से देखा गया है। समाज इस वर्ग विशेष को अपनाने के लिए कभी तैयार नही रहा है। यह समाज इस समुदाय को इन्सान ही नही मानते हैं ''देखो तुम्हारा बार–बार टेलीफोन करना या इस परिवार से सम्बन्ध रखना, हमारी इज्जत तो बढ़ाता नहीं, उलटे तुम्हें भी दुःख होता है और मम्मी–पापा को भी। तुम परिवार में रह नहीं सकती, हम रख भी नही सकते। इसलिए यह समझ लो तुम कि अनाथ हो। कोई नहीं तुम्हारा दुनिया में''[1]

जनानांग दोष के साथ पैदा हुए बच्चे को समाज तो क्या परिवार भी स्वीकार नही करता। वह भी अपनी इज्जत को बचाने के लिए अपने ही बच्चे को अपनी जिंदगी से बाहर निकाल देते हैं। नीरजा माधव द्वारा रचित उपन्यास 'यमदीप' में किन्नर पात्र नंदरानी उर्फ नाजबीबी को जब अपने परिवार की याद आती है तो वह अपने घर पर फोन करती है, किन्तु बदले में उसे पीड़ा ही मिलती है। उसका तिरस्कार ही किया जाता है। नाजबीबी के उसके ही परिवार के लोग उसकी शारीरिक कमी के कारण उसे अपने जीवन से निकाल देते हैं उसे अनाथ कहने लगते हैं।

सभ्य कहा जाने वाला यह हमारा समाज किन्नरों की ऐसी दुर्दशा के लिए जिम्मेदार है। समाज की ऐसी नीच मानसिकता ही किन्नर समुदाय को शापित जीवन जीने के लिए विवश करती है 'यमदीप' उपन्यास में लेखिका एक मर्मिक प्रसंग को हमारे सम्मुख अपनी लेखनी के द्वारा प्रस्तुत करती है। ''हिजड़े का बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पाएंगे और न आप के परिवार के लोग। लुली–लंगड़ी होती या, कानी–कोतर होती, तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे... इसलिए इसे अब उसके हाल पर छोड़ दीजिए। यही उसका भाग्य था, यही बदा था.... सोच लीजिए, मर गई, सब्र कर लीजिए'' [2]

इस समाज में एक किन्नर के रूप में जी पाना कितना मुश्किल है इसका अंदाजा हम इस कथन के माध्यम से समझ सकते है। किन्नर नाजबीबी के माता–पिता न चाहते हुए भी अपनी औलाद को अपना नही पाते हैं। उन्हे इस समाज की परवाह होती है। महताब के द्वारा कहे गये ये शब्द किसी के भी हृदय को व्यथित करने के लिए पर्याप्त है। किसी परिवार में शारीरिक दोष के साथ पैदा हुए बच्चे का क्या दोष है इसमें उसका क्या कसूर है?

किन्नर समुदाय का सिर्फ सामाजिक तिरस्कार ही नही किया जाता है बल्कि उसके जीवन के सभी पहलुओं पर यह समाज गहरा प्रतिघात करता है। जहाँ इन्हें परिवार व समाज स्वीकार नहीं करता वहीं इनको शिक्षा से भी वंचित होना पड़ता है। गुलाम मंड़ी उपन्यास में लेखिका निर्मला भुराडिया अंगूरी के माध्यम से कहती है–कि ''कोई भरती करता क्या पाठशाला में, पहले पूछते मेल कि फिमेल। अपनी वो शर्मिला है न छोरा बनके भरती हुई थी, तो बहनजी ने एक दिन चड्डी उतरवा ली थी उसकी और जूते मारकर के स्कूल से निकलवा दिया था उसको। उमराव गुरू के कुनबे ने शरण दी उसको वरना भूखी मर जाती तो।''[3] किन्नर समुदाय के प्रति समाज का नजरिया अवमानवीय है। लेखिका ने उक्त कथन के माध्यम से इनकी गहरी संवेदना को व्यक्त करती है। निर्मला भुराड़िया का यह उपन्यास ह्यूमन ट्रेकिकिंग, देह व्यापार, किन्नरों के जीवन की अनेक समस्याओं पर प्रकाश डालता है।

हमारे भारतीय समाज और किन्नर समुदाय के बीच एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी है। यह समाज हर समय इनपर चोट करता है। इसके साथ ही अपशब्द और गन्दी–गाली देकर पुरस्कृत भी करता है। हमारी असंवेदना के कारण ही यह लोग शापित जीवन जीने के लिए विवश है। समाज जो इस समुदाय को अपना नही मानता वह इन्हें चैन से रहने भी नहीं देता। यह समाज अकारण ही इन्हें अपमानित करता रहता

है। इससे इन्हें कितना मानसिक कष्ट होता होगा,इसका अंदाजा लगा पाना कठीन है।

उपन्यास 'मंगलामुखी' में लेखिका अपने एक किन्नर पात्र की पीड़ा का वर्णन करती हुई कहती हैं कि ''तू लड़की नही... हरी से ज्यादा मैं भौचक्की रह गई... यह जानकर कि मैं लड़की नहीं... फिर कौन हूँ मैं.... तू किन्नर है किन्नर'' कहते हुए उसने मुझे लात मारकर बिस्तर से नीचे ठेल दिया।

''साली! धोखा करती है मेरे साथ, मैं ही पागल था तेरे रूप जाल में फंसकर समझ नही पाया,तू प्यार मोहब्बत के लिए नहीं बनी, तू मेरे क्या किसी मर्द के काम के लिए नही बनी'' [4]

किन्नर के रूप में जन्म लेना एक बहुत बड़ी त्रासदी है। ईश्वर ने इन्हें किन्नर जीवन देकर प्रताड़ित किया है। यह भगवान के द्वारा किया गया अन्याय ही है। जननांग दोष होने के कारण परिवार और समाज इनका जीना मुश्किल कर देते है– ''तू हिजड़ा है हिजड़ा हमारा तेरे से कोई नाता नही, तू हमारा कुछ नहीं लगता, भाग जा यहाँ से क्यों हमारी नाक कटाने पर लगा है। हिजड़ा कही का।''[5]

अधिकतर भारतीय परिवार और समाज इस समुदाय को स्वीकार करने को तैयार नहीं है पर कुछ परिवार इस समाज से लड़ने की हिम्मत तो जुटाते हैं, पर हार जाते हैं। भगवंत अनमोल के उपन्यास में एक ऐसी कथा का समावेश है– उपन्यास में किन्नर मुखिया कस्तूरी कहती है–

''पर एक बात नोट कर ले तिवारी। हिजड़े का बाप है तू हिजड़े का और इतना आसान न है समाज में हिजड़े का बाप बनकर जीना,सूई की नोक पे रहना होता है इसकी चुभन से तोरा पैर ही नहीं, तोरा शरीर ही नहीं, तोरी आत्मा तक तड़पेगी.... यह समाज तुझे जीने नही देगा या तू खुद मर जायेगा या फिर तंग आकर खुद चलते हुए उस बच्चे को हमारे यहाँ देने आएगा।''[6]

किन्नर को केन्द्र में रखकर लिखे गये उपन्यासों में डॉ0 अनसूया त्यागी का 'मैं भी औरत हूँ' (2005) अन्य उपन्यासों में विशेष उल्लेखनीय है। लेखिका स्त्रीरोग एवं प्रसुती विशेषज्ञ है। इस उपन्यास में ऐसी दो बहनों की कथा है जिसमें इन्हें और इनके परिवार को लम्बे समय तक उनके हिजड़ा होने का आभास ही नही होता है। ''रोशनी काँप उठी तब क्या उस लड़के ने जो कहा था, वह सच है, वह लड़की नही है, वह औरत नही है, तब फिर मैं क्या हूँ.... क्यों इसीलिए मुझे माहमारी प्रारंभ नही हुई? क्या मेरी शादी नही हो पायेगी ? क्या मैं कभी माँ नहीं वन पाऊँगी? ओह... क्या मैं नपुंसक हूँ पर फिर मेरी ऊपरी बनावट स्तन आदि तो ठीक हैं पर अन्दर कुछ ठीक नही है, यह सब मुझे कौन बताएगा?''[7]

इस उपन्यास में जब दोनों बहनों को पता चलता है की वह हिजड़ा हैं तो दोनों का ऑपरेशन होता है। जिसमें एक बहन पूर्ण रूप से स्त्री बन जाती है उसका विवाह भी होता है वह बच्चे को भी जन्म देती है किन्तु छोटी बहन नपुंसक ही रहती है। लेखिका ने जहाँ इस उपन्यास में शरीर विज्ञान और चिकित्सा सम्बन्धी विवरण प्रस्तुत किये हैं वहीं किन्नर जीवन की वेदना को भी गम्भीरता के साथ वर्णित भी किया है।

जनानांग दोष के कारण इन्हें समाज में जो तिरस्कार मिलता है वह अकथनीय है। इस समुदाय के साथ इतना अधिक भेदभाव होता है कि इनको कोई काम पर नहीं रखता ये भीख माँगने के लिए विवश हो जाते हैं। सरकारें भी इनकी ओर ध्यान नही देती। काम न मिलने पर इन्हें भीख माँगनी पड़ती है। महेन्द्र भीष्म ने अपने उपन्यास 'मैं पायल' में इस प्रसंग को उद्घाटित किया है।

''भूख और प्यास पायल को बेहाल किए हुए थी। भूख के मारे दम निकल रहा था। चाट के ठेले के पास पहुँचने से मेरी भूख और बढ़ गयी थी, मन हो रहा था कि जूठे दोने में बची–खुची चाट ही खा लूँ मैं यह सोच ही रही थी कि मैंने देखा मेरी हम उम्र के दो बच्चे वहाँ आकर जूठन चाटने लगे। दोनों बच्चे कुछ न बोले बल्कि एक ने एक दोना मेरी तरफ बढ़ा दिया। दोने में मटर के कुछ दाने थे पर दही व मीठी चटनी लगी हुई थी, मैंने जीभ से दोना चाट लिया''[8]

इस समाज से इतना तिरस्कार मिलने के बाद अब ये समुदाय अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है हिन्दी साहित्य में अब इस विमर्श को स्वीकार किया जा रहा है साहित्यकार अपनी बेजोड़ लेखनी के द्वारा इस विशेष समुदाय के सामाजिक जीवन, उनकी समस्याओं को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। लेखिका चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित उपन्यास 'पोस्ट बाक्स नं0 203 नाला सोपारा' के माध्यम से कहती हैं कि– ''साथ देंगे किन्नर हमारा तो हम उनके आरक्षण की मुहिम चलाएंगे जोड़ेंगे उन्हें, विकास के समान अवसरों से, शिक्षा, रोजगार, सम्पत्ति, ऋण बूढ़ों को पेंशन, बेरोजगार युवाओं का भत्ता, लेकिन ताली एक हाथ से नही बजती संगठित होना पड़ेगा। आवाज उठानी पड़ेगी। देशव्यापी आन्दोलन छेड़ना पड़ेगा जेलें भरनी पड़ेगी।''[9]

वर्तमान समय में सरकार भी किन्नर समुदाय (थर्ड जेंडर) की सुविधाओं की ओर ध्यान दे रही है। (द राइटस ऑफ ट्रांसजेंडर पर्सन्स बिल 2014) पास किया गया। यह बिल किन्नरों के अधिकारों पर अधारित था। इसके बाद ट्रांसजेंडर पर्सन्स (प्रोटेक्शन ऑफ राइट) बिल 2016 पास किया गया। राज्य सभा द्वारा इस बिल को 20 जुलाई सन् 2016 ई0 को मंजूरी दी गई। भारत सरकार की कोशिश के जरिए यह व्यवस्था लागू करने की गई है जिससे किन्नरों को भी सामाजिक जीवन में शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र में आजादी से जीने का अधिकार मिल सके।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सिर्फ जनानांग दोष के कारण किन्नर समुदाय को समाज से उपेक्षित किया जाना उचित नही है। यह समुदाय भी हमारी तरह मानवीय संवेदनाओं से युक्त है। इन्हें भी पीड़ा होती है। परिवार और समाज से बहिष्कृत होकर जीना कितना मुश्किल होता है। इसकी हम और आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। किन्नर समुदाय को समाज का साथ न मिलने के कारण इनका जीवन दुःखों से परिपूर्ण होता है। जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो या फिर राजनैतिक हो हर क्षेत्र में इनके साथ अपनी सोच को बदलने की जरूरत है ताकि किन्नर भी समाज की मुख्यधारा में जुड़कर एक सामान्य जीवन जी सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. माधव नीरजा, यमदीप, सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, 2002,पृष्ठ संख्या– 82
2. माधव नीरजा, यमदीप, सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, 2002,पृष्ठ संख्या– 31
3. भुराड़िया निर्मला, गुलाम मंड़ी, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली 2010, पृष्ठ संख्या– 85
4. अग्रवाल डॉ0 लता, मंगलामुखी, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ संख्या– 49
5. भीष्म महेन्द्र, किन्नर कथा, समाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–51
6. अनमोल भगवंत, जिन्दगी 50–50, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ संख्या–47

7. त्यागी डॉ0 अनसूया, मैं भी औरत हूँ, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ संख्या– 17
8. भीष्म महेन्द्र, मैं पायल, अमन प्रकाशन,कानपुर,2017, पृष्ठ संख्या–139
9. मुद्गल चित्रा, पोस्ट बॉक्स नं0 203 नाला सोपारा, सामाजिक प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–153

Copyright © 2018, Jyoti & Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.